Special Issue Vol-01. Oct. To Dec.2020

Vidyawarta®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

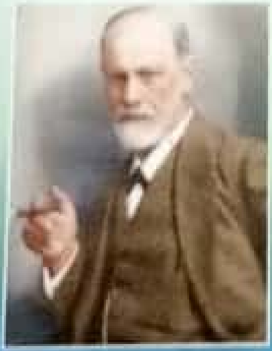

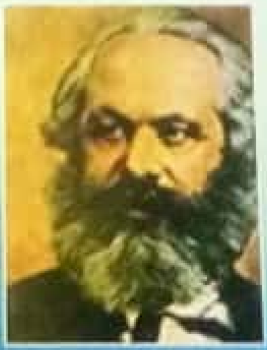

संपादक
प्रा. व्ही. एच. वाघमारे

सहसंपादक
प्रा. एस. जे. पाटील

Scanned by CamScanner

24	डॉ. आर. डी. कांबळे,	समकालीन साहित्य आणि त्यांचीधी नाटकातील स्त्री प्रतिमा	132
25	प्रा. रेखा काशिनाथ पसाले	समकालीन मराठी साहित्य आणि मराठी चित्रपट	135
26	डॉ. प्रियांका शंकर कुंभार	मराठी साहित्य आणि समकालीन अनुवादाचे स्वरूप	138
27	रोहिणी गजानन रेळेकर	प्रेषित : मानव आणि परग्रहवासीयांच्यातील भावबंध	145
28	डॉ. विजय विष्णू लोंढे	हिंदी दलित कहानी साहित्य की सीमाएँ	151
29	डॉ.पंडित बन्ने	सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट : जनसंचार का सशक्त माध्यम	157
30	डॉ. कल्पना किरण पाटोळे	'एक जमीन अपनी' : नारी जीवन की संघर्षगाथा	159
31	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	हिंदीकाव्य के शलाकाव्यक्तित्व: नागार्जुन	164
32	प्रा.नितीन हिंदुराव कुंभार	आज के युग में जनसंचार माध्यमों का योगदान (हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में)	167
33	डॉ. श्रीकांत पाटील	'झुनिया' उपन्यासमें मजदूर विमर्श	171
34	डॉ.अजयकुमार कृष्णा कांबळे	आत्मसम्मान के लिए जूझती नारियाँ : एक परिदृश्य	173
35	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	ममता कालिया के उपन्यासों में नारी	176
36	प्रा.भिमाशंकर गायकवाड	हिंदी पत्रकारीता का विकास	178
37	प्रा.अभिजीत कबीर शेवडे	दलित चेतना एवं दलित साहित्य की अवधारणा	181
38	डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील	'दोहरा अभिशाप' पर स्त्री विमर्शमूलक वैचारिक मंथन	185
39	डॉ.मालोजी अर्जुन जगताप	दलित समाज के प्रतिसवर्णों की मानसिकता का यथार्थ अंकन :आगे रास्ता बंद है	188
40	प्रा. नीता पोपट साठे	"डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के भूमि की ओर" नाटक में चित्रित सामाजिक संवेदना	191
41	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	स्त्री मन की अभिव्यक्ति : एक कहानी यह भी	193
42	प्रा.संगीता विष्णु भोसले	'कस्तूरी कुंडल बसै' आत्मकथा में नारी संवेदना	195
43	कविता दत्तु चव्हाण	हिंदी नाट्य साहित्य में नारी का चित्रण	200
44	शहिदा नजीर अत्तार	घुमंतू समाज : कल और आज	204
45	प्रा. स्मिता अभिजित वणिरे	"हिंदी साहित्य और सामाजिक संवेदना"	207
46	प्रा. रामहरि काकडे	हिंदी नाटकों मेंस्त्री विमर्श	209
47	प्रा.एल.एस. सिताफुले	ग्रामीण विकासात मत्स्य व्यवसायाची भूमिका विशेष संदर्भ 'रत्नागिरी जिल्हा'	214
48	Dr.S. P. Bansode	Demonetization and Cashless Economy	219
49	Prof. B. A. Tarhal	A Study of Impact of E-Commerce on Indian Economy	222
50	Dr. Barale Santosh I.	Inclusive Education in India: A Critique	228
51	Dr. Bhoge D.B.	Problems and Prospects of Agriculture Labour in India	231
52	डॉ. ए. एस. नलवडे	आर्थिक विकास एक पर्यावरणीय समस्या आणि उपाययोजना	236
53	प्रसाद पांडुरंग दावणे,	भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या सक्षमीकरणामध्ये सेवाक्षेत्राचे योगदान	240
54	प्रा.तटाळे पदमाकर बळीराम	ग्रामीण विकासात सहकारी प्रक्रिया उद्योगाची भूमिका	245
55	Dr. Barale Santosh I.	Globalization and Women Empowerment: A Paradigm Shift	249
56	Dr. Stuti Bhrigu	RECENT TRENDS IN BANKING SECTOR	254

Scanned by CamScanner

अम्बेडकरवादी साहित्य लेखन को नई शक्ति प्रदान की है। आज का अम्बेडकरवादी साहित्य जन-समुदाय में जुड़कर जनभाषा में क्रान्ति का बिगुल बजा रहा है।

निष्कर्ष :

अतः अम्बेडकरवाद दर्शन सामाजिक स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, समरसता और न्याय की व्यवस्था कायम होनी चाहिए यह सिख देता है। अम्बेडकरवाद दर्शन में स्वयं अम्बेडकर ने कहा और स्वीकार भी किया है कि उनका दर्शन निर्माण और संघर्ष की प्रेरणा के पीछे गौतम बुद्ध, कबीर तथा महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन दर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अम्बेडकरवाद दर्शन एवं धर्म को ताकद बतलाते हुए कहते है,भारत का इतिहास यह दर्शाता है कि, यहाँ धर्म ताकत का साधन रहा है और साधु-संतों का सामान्य लोगों पर हमेशा प्रभुत्व रहा है। मॅजिस्ट्रेट से भी ज्यादा और यहाँ तक कि हड़तालों और चुनावों को भी बड़ी आसानी से धार्मिक मोड दिया जाता है

अम्बेडकरवाद दर्शन यह दुखों की अनुभूति का एहसास दलितों में एक सामान्य चेतना अपनी ऐतिहासिक गुमामी को पहचानते हैं। यदि इस प्रकार से देखा जाए तो अम्बेडकरवादी दर्शन में एक प्रकार की वर्गीय चेतना के संकेत अवश्य मिलते है। शोषित होने का अनुभव से उपजी अम्बेडकरवादी दर्शन के इस वर्गीय चेतना का स्वरूप कैसा है इसका परीक्षण अवश्य होना चाहिए। अम्बेडकरवादी दर्शन में सच्ची व्यावहारिक वर्ग चेतना की सच्ची शक्ति आर्थिक प्रक्रिया के विभाजनकारी लक्षणों से परे जाकर उसमें निहित समग्र समाज व्यवस्था की एकता में निहित होती है।

संदर्भ

१. राजेन्द्र मोहन भटनागर - डॉ.अम्बेडकर जीवन एवं दर्शन, पृ.३२

२. राजेन्द्र मोहन भटनागर - डॉ.अम्बेडकर जीव न एवं दर्शन, पृ.१५८

३. हिंदी-मराठी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश, Vol.३० पृ.२७

४. डॉ.रावसाहेब कसबे - आंबेडकरवाद : तत्त्व आणि व्यवहार, पृ.२०, २१

५. शरण कुमार लिंबाले - दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृ.११

६. डॉ.रावसाहेब कसबे - आंबेडकरवाद : तत्त्व आणि व्यवहार, पृ.२०, २१

७. डॉ.यशवंत मनोहर - अम्बेडकरवादी मराठी साहित्य, पृ.५०

८. प्रा.दामोदर मोरे - अम्बेडकरवादी साहित्य विशेषांक, जुलाई - २००४, पृ.०६

९. डॉ.तेजसिंह-अपेक्षा पत्रिका, अम्बेडकरवादी साहित्य विशेषांक, जुलाई - २००४,पृ.०६

50

आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि में मनोविश्लेषणवाद

प्रा. कविता चव्हाण
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
टिकाराम जगन्नाथ कला, वाणिज्य व विज्ञान
महाविद्यालय खडकी, पुणे

साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है। साहित्य समाज का दर्पण बनकर कभी उसकी अच्छाईयो कभी उसकी बुराईयों का प्रतिबिंब दिखाता है और कभी समाज का मार्गदर्शन करते हुए बुराइयों से संघर्ष करने की प्रेरणा भी मनुष्य को देता है। जो समाज में घटित होता है उसे साहित्यकार देखता है, सुनता है, जो अनुभव करता है उसे अपनी लेखनी के द्वारा अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता है। अतः साहित्यकार समाज का वास्तविक चित्रण करने का आदि है।

हिंदी साहित्य की बात हम करे तो वह अपने आप में विस्तृत ज्ञान का भंडार है। हिंदी साहित्य मे आधुनिक युग की शुरूवात आ. रामचंद्र शुक्लके वि. स. १९०० यानी सन १८४३ ईसवी से मानते है। १८५७ मे हुए भारत के प्रथम स्वतत्रंता संग्रामने देश मे एक नई चेतना को जन्म दिया। बढता औद्योगिकीकरण, संचार साधनों मे वृध्दि और नई अर्थव्यवस्थाने भारत को नवीनता और गति प्रदान की। अतः समाज ने इसे पश्चिमीकरण न कहकर आधुनिकीकरण कहकर संबोधित किया। आधुनिकीकरण एक दृष्टिकोण है जो वैज्ञानिक सोच से बनता है। जैसे मैंने उपर कहा है कि साहित्य समाज का दर्पण है इसी उक्तिनुसार बढता औद्योगिकीकरण, पाश्चात्य संस्कृति का समाज पर पड रहा प्रभाव हमे स्पष्ट रूप से तत्कालीन साहित्य मे देखने को मिलता है। आधुनिक युग मे साहित्य मे

Scanned by CamScanner

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

Scanned by CamScanner

बनाया।

निष्कर्ष: हम कह सकते है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के विकास में यौन तत्व प्रमुख योग रहा है। मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार शिक्षित वर्गीय समाज में पुरुष तथा नारी के संबंध में नवीन रूप धारण करने में तो विफल रहे है। परंतु मानसिक ग्रंथियो को पुष्ट करने में सफल हुए है। हिंदी के मनोविश्लेषणवादी साहित्य में सेक्स संबंधी कुंठाओं, दमित काम वासनाओं का चित्रण अत्यंत मार्मिक और कहीं कहीं नग्नरूप में हुआ है। इन ग्रंथियो के उद्घाटन में एवं अवचेतन मन के निरूपण में 'फ्रायड', 'एडलर', 'युंग' आदि विद्वानों के मनोवैज्ञानिक सिध्दांतो का स्पष्ट तथा गहन प्रभाव आधुनिक हिंदी साहित्य पर दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ –

१) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबु गुलाबराय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा पृ १४६

२) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ– डॉ जयकिशन प्रसाद, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ ६७३

३) शेखर एक जीवनी – अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृ. १२३, १२४

४) वही – भूमिका से

५) वही

६) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपर बैक्स संस्करण, पृ. ६८४

७) उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा – डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, पृ. १४८

८) मनोविश्लेषणवाद – फ्रायड

९) फ्रायड एण्ड लिट्रेचर – लोनेल ट्रिलींग

❑❑❑

51

आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्सवाद

डॉ. वीना सुमन
असिस्टेन्ट प्रो., हिंदी विभाग,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मार्क्सवाद ऐसा पहला समाज–दर्शन है जिसने सचेत रूप से दुनिया को बदलने के लिए उसे समझने का प्रयत्न किया। इस प्रक्रिया में जहां उसने शोषण के तमाम रूपों के बीच मौजूद अंतर्संबंध को पहचाना, वहीं मनुष्य की सांस्कृतिक गतिविधियों की विचारधारात्मक भूमिका की खोज करने का भी प्रयास किया। इस प्रक्रिया में मार्क्सवाद ने एक ऐसी आलोचना पद्धति विकसित करने का प्रयास किया जो साहित्य और समाज के रिश्ते को स्पष्ट कर सके। साहित्य के विश्लेषण की एक विशिष्ट पद्धति के रूप में मार्क्सवादी आलोचना आज दुनिया भर में स्थापित हो चुकी है। उस पर विवाद है, विद्वानों की असहमतियां है, लेकिन उसके महत्व से इनकार कर पाना असंभव है।

हिन्दी आलोचना का इतिहास जितना पुराना है, उससे कुछ ही कम पुराना हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना का इतिहास है। हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना ने सत्तर से भी अधिक वर्षों की इस अवधि के दौरान न सिर्फ कई शीर्षस्थ मार्क्सवादी आलोचक दिए है, बल्कि एक तरह से आलोचना के क्षेत्र में अपना वर्चस्व बनाए रखा है। इसके बावजूद उसकी स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं कही जा सकती। हिन्दी में मौलिक सैद्धांतिक कृतियों का लगभग अभाव है, मार्क्सवादी दृष्टि से पूरे हिन्दी साहित्य का इतिहास तक नहीं लिखा जा सका है। खुद मार्क्सवादी आलोचना के पूरे इतिहास और उसमें चली बहसों का लेखा–जोखा लेने वाली कृतियों का भी अभाव है। रामविलास शर्मा और नामवर सिंह जैसे कुछ बड़े आलोचकों पर किताबें

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

आधुनिक हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

संपादक

प्रा. व्ही. एच. वाघमारे

सहसंपादक

प्रा. एस. जे. पाटील

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मताशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

विभिन्न प्रकार के वाद आए। जैसे प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद, अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद! इनमें से आधुनिक हिंदी साहित्य में मनोविश्लेषणवाद का आरंभ कैसे हुवा ये हम विस्तृत रूप में जानते है।

मनोविश्लेषणवाद मानव मन की आंतरिक प्रक्रियाओ का अध्ययन करनेवाली आधुनिक अध्ययन पध्दति है। मनोविश्लेषणवाद मस्तिष्क के चेतन और अवचेतन भाग कर उसमें अवचेतन मन को विशेष महत्व देता है। यही अवचेतन हमारे कार्यव्यापरो का सारे नैतिक आचारो का निर्माता और नियन्ता है। मनोविश्लेषणवाद के जनक 'फ्रायड', 'एडलर' और 'युंग' है। 'फ्रायड' ने मनोविश्लेषणवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मनुष्य के मानस में अवचेतना का अंश अधिक होता है और चेतना का अंश तुल्नात्मक रूप से कम। मनुष्य की मूल प्रवृत्ति का कोश अवचेतन मन है। समाज और संस्कृति का प्रभाव मनुष्य के चेतन पर पड़ता है। अतः वह अपने अवचेतन मन की वृत्तियो को दमन करता है क्योंकि अवचेतन मन की स्वीकृती असामाजिकता और संस्कृति हीनता का प्रश्न उठाती है। इसके साथ ही फ्रायडने सेक्स को महत्ता प्रदान की है। कामवासनाओंकी अतृप्ति से उत्पन्न होनेवाली कुंठाओं को लेकर ही फ्रायड के सेक्स मनोविज्ञानने प्रगति की है।

मनुष्य के मन में उत्पन्न होनवाली हीन भावना को 'एडलरने' मन की परिचालिका शक्ति कहा है। हीनता की भावना मनुष्य मे अहं भाव को जगाती है और इससे परिचालित होकर वह अपने महत्व को अनुभव करने एवं कराने की आवश्यकता का अनुभव करते हुए उसी अनुरूप आचरण एवं व्यवहार करता है।

'युंग' नामक विद्वानने मनोविश्लेषणवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मनुष्य की स्मृतियों, मानसिक कार्य व्यापार को चेतन मन में एकत्रित नहीं रख पाती और वे अवचेतन मन में चली जाती है। अवचेतन मन में दमित रहनेवाली स्मृतियाँ, विचार एवं अनुभूतियाँ अहं स्वीकार नहीं कर पाता। परिणामी मनुष्य के मन मे भय, मृत्यु, आशंका जैसी स्थितियाँ निर्माण होती जिसका प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य मे फ्रायड के कुंठावाद के आधार पर अनेक लेखको ने मनुष्य की दमित कामवासनाओं, कुंठा, काम प्रवशत्ति, दंभ, हीनभावना, अहं आदि ग्रंथियो का चित्रण अपनी रचनाओ मे किया है। हिंदी साहित्य में मनोविश्लेषणवादी रचनाएँ लिखने का सूत्रपात 'जैनेंद्र', 'अज्ञेय', और 'इलाचंद्र जोशी' ने किया है। 'जैनेंद्र कुमार' के उपन्यासो मे मनोवैज्ञानिक चित्रण की एक विशेष शैली दिखाई पड़ती है। उनकी ये शैली की मूल प्रवृत्ति रोमानी राग, अहं और वासना के द्वंद्व की है। उनके मनोवैज्ञानिक उपन्यासों मे 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'सुखदा', 'कल्याणी', 'व्यतीत' आदि का समावेश होता है। उन्होंने अपने उपन्यासों मे स्त्री पुरूषो के पारस्पारिक संबधो का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है जिस कारण उनके उपन्यास विशेष चर्चित हुए। इसके साथ ही 'पत्नी', 'खेल', 'चोर', 'जान्हवी', 'पाजेब', 'समाप्ति' आदि कहानियो मे पात्रो का मनोवैज्ञानिक चित्रण उन्होंने किया है। 'परख' और 'सुनीता' जैसे उपन्यासो मे पाठकों को पहली बार नए प्रकार के कथ्य का साक्षात्कार हुवा। जैनेंद्र केवल अनुकरण की कला नहीं मानते उन्ही के शब्दो में "उपन्यासों मे जैसी दुनिया है वैसी ही विचित्र नही होती, दुनिया का कुछ उठा हुवा, उन्नत कल्पित रूप चित्रित किया जाता है। वह उपन्यास किसी काम का नही जो इतिहास की तरह घटनाओ का बखान कर जाता है। वह दुनिया को आगे बढ़ाने में जरा भी मदत नहीं देता।",

'सुनीता' मे उन्होंने हरिप्रसन्न की अमुक्त कामवासनाजन्य मनोग्रंथी को आधार बनाया गया है। 'कल्याणी' इस उपन्यास मे 'कल्याणी' का अन्त : संघर्ष है। वह पति की स्वार्थपरता पर क्षुब्ध होते हुए भी शरीर का व्यापार करती रहती है। 'त्यागपत्र' इस उपन्यास मे 'मृणाल' का जीवन अतृप्ति से आरंभ होता है। यौवनागम के साथ ही उसमें प्रेम करने की भावना उत्पन्न होती है और उसे पूर्णता न मिलने के कारण उसके मन मे अतृप्ति तथा कुंठा भर जाती है जो आदयन्त चलती है। वह परपुरूष को समर्पण कर देती

Scanned by CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता
January 2019
ISSN- 2348-7143
UGC Approved No. 40705

मूल है। जिससे उपभोक्ता आकृष्ट होते है। विज्ञापनों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग देखकर हम ये निश्चित क सकते है कि हिंदी यह विश्वभाषा बनने कह ओर अग्रसेर हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ –

मिडिया के सिद्धांत – एन. सी. पंत
मिडिया कालीन हिंदी स्वरूप एवं संभावनाएं – डॉ. अर्जुन चव्हाण
प्रयोजनमूलक हिंदी प्रासंगिकता एवं परिदृश्य – डॉ. सु .नागलक्ष्मी
विज्ञापन जनसंचार माध्यम और सामाजिक परिवर्तन – डॉ. अनिल पुरोहित
विज्ञापन की दुनिया – कुमुद पुरोहित
www.google.com

Scanned by CamScanner

Date of Publication
04 Jan. 2020

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disappoval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT FACTOR 6.021 IIJIF

Cosmos IMPACT FACTOR 5.234

Govt. of India, Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 6.021(IIJIF)

Scanned by CamScanner

बनाया।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यासो के विकास मे यौन तत्व प्रमुख योग रहा है। मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार शिक्षित वर्गीय समाज मे पुरुष तथा नारी के संबंध मे नवीन रूप धारण करने मे तो विफल रहे है। परंतु मानसिक ग्रंथियो को पुष्ट करने मे सफल हुए है। हिंदी के मनोविश्लेषणवादी साहित्य में सेक्स संबंधी कुंठाओ, दमित काम वासनाओ का चित्रण अत्यंत मार्मिक और कही कहीं नग्नरूप मे हुवा है। इन ग्रंथियो के उदघाटन मे एवं अवचेतन मन के निरूपण मे 'फ्रायड', 'एडलर', 'युंग' आदि विद्वानो के मनोवैज्ञानिक सिध्दांतो का स्पष्ट तथा गहन प्रभाव आधुनिक हिंदी साहित्य पर दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ –

१) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास – बाबू गुलाबराय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा पृ. १८६

२) हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ– डॉ जयकिशन प्रसाद, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ ६७३

३) शेखर एक जीवनी – अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृ. १२३, १२४

४) वही – भूमिका से

५) वही

६) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपर बैक्स संस्करण, पृ. ६८४

७) उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा – डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, पृ. १४८

८) मनोविश्लेषणवाद – फ्रायड

९) फ्रायड एण्ड लिट्रेचर – लोनेल ट्रिलीग

□□□

51

आधुनिक हिंदी साहित्य में मार्क्सवाद

डॉ. वीना सुमन
असिस्टेन्ट प्रो., हिंदी विभाग,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

****

मार्क्सवाद ऐसा पहला समाज–दर्शन है जिसने सचेत रूप से दुनिया को बदलने के लिए उसे समझने का प्रयत्न किया। इस प्रक्रिया मे जहां उसने शोषण के तमाम रूपों के बीच मौजूद अंतर्संबंध को पहचाना, वही मनुष्य की सांस्कृतिक गतिविधियो की विचारधारात्मक भूमिका की खोज करने का भी प्रयास किया। इस प्रक्रिया मे मार्क्सवाद ने एक ऐसी आलोचना पद्धति विकसित करने का प्रयास किया जो साहित्य और समाज के रिश्ते को स्पष्ट कर सके। साहित्य के विश्लेषण की एक विशिष्ट पद्धति के रूप मे मार्क्सवादी आलोचना आज दुनिया भर मे स्थापित हो चुकी है। उस पर विवाद है, विद्वानो की असहमतियां है, लेकिन उसके महत्व से इनकार कर पाना असंभव है।

हिन्दी आलोचना का इतिहास जितना पुराना है, उससे कुछ ही कम पुराना हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना का इतिहास है। हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना ने सत्तर से भी अधिक वर्षो की इस अवधि के दौरान न सिर्फ कई शीर्षस्थ मार्क्सवादी आलोचक दिए है, बल्कि एक तरह से आलोचना के क्षेत्र मे अपना वर्चस्व बनाए रखा है। इसके बावजूद उसकी स्थिति बहुत संतोषजनक नही कही जा सकती। हिन्दी मे मौलिक सैद्धांतिक कृतियो का लगभग अभाव है, मार्क्सवादी दृष्टि से पूरे हिन्दी साहित्य का इतिहास तक नही लिखा जा सका है। खुद मार्क्सवादी आलोचना के पूरे इतिहास और उसमे चली बहसो का लेखा–जोखा लेने वाली कृतियों का भी अभाव है। रामविलास शर्मा और नामवर सिंह जैसे कुछ बड़े आलोचकों पर किताबे

Scanned by CamScanner

करनेवाला नहीं। इस नाटकों में यथार्थता को स्थान मिला। वर्तमान समय की समस्याओं और विसंगतियों को नाटकों में स्थान मिला। 'लक्ष्मीनारायण लाल' के 'अंधा कुआँ' इस नाटक में ग्रामीण नारी की मजबूरी का कारुणिक चित्रण हुआ है। इस नाटक में 'सूका' इस नारी पात्र के जरिये नारी जीवन की त्रासदी और उसके कष्टों को उजागर किया है। इसमें नारी की घुटन, पुरुष का हृदय को झकझोरने वाला यथार्थ चित्रण हुआ है। नाटक में 'भगौती' क्रूर और उद्दंड पति है। वह अपनी पत्नी 'सूका' से पशु जैसा व्यवहार करता है उसे मारता–पीटता है। 'सूका' अपने पूर्व प्रेमी के साथ भाग जाती है, किंतु 'भगौती' उसे वापस लेकर आता है और सारे गाँववालों के सामने कहता है कि अब उसके साथ मारपीट नहीं करेगा। घर पर आकर उसके साथ वही पूर्ववत पशु जैसा व्यवहार करता है, उसे मारता है। इस पर 'भगौती' का भाई बीच में आकर 'सूका' को बचाने का प्रयत्न करता है तो 'भगौती' उसे घर से बाहर जाने को कहता है। इस पर 'सूका' कहती है "मुझे अकेली न छोड़ना इस घर में, मुझे यह मार डालेगा, जिन्दा गाड़ देगा धरती में।" अतः नारी पर हो रहे अत्याचार को तथा उससे मुक्त होने के लिए उसकी छटपटाहट को लक्ष्मीनारायण लालजीने इस नाटक में अभिव्यक्ति दी है। 'आषाढ़ का एक दिन' इस नाटक में 'मोहन राकेश' ने नारी के ऐसे रूप को चित्रित किया है जो प्रेम को सर्वोपरी मानती है। 'मल्लिका' 'कालिदास' की प्रेरणा बनती है उसके विकास में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करती। कालिदास के प्रति उसकी निस्वार्थ प्रेमभावना है। वह धन, ऐश्वर्य को महत्व न देते हुए कालिदास के प्रति उसकी जो भावनाएँ है उसे महत्व देती है। वह अपनी माँ 'अम्बिका' से कहती है "मैने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह सम्बन्ध सब सम्बन्धों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है।" 'उदयशंकर भट्टने' 'विद्रोहिनी अम्बा' इस नाटक में हिंदू विवाह पद्धती का विरोध करनेवाली जागरूक नारी के विद्रोह के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। नाटककार 'सुरेंद्र वर्मा' का दृष्टिकोन प्रगतिशील है। वे स्त्री का अस्तित्व माँ, बहन, पत्नी और सहचरी के रूप में तलाशने की बजाय "स्त्री" रूप में तलाशते हैं। वे सभी सड़ी–गली, अंधी परंपराओं को सिरे नकार देते हैं। उनका सूर्य की अंतिम किरण से लेकर पहली किरण तक नाटक में उन्होंने नारी मन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। इस नाटक नारी पात्र 'शीलवती' अपनी शक्ति से शक्तिशाली अमात्य, परिषद और राजसाहब को धाराशाही कर देती है। कामनटी बनकर वह अशिष्ट और अभद्र वार्तालाप करती है। 'सुरेंद्र वर्मा' स्त्री के इस उग्र, उच्छल, उन्मादपूर्ण और प्रचंड छिन्नमस्ता रूप के जरिये स्त्री के चुप्पीवाले मिथ को तोड़ते है। "मर्यादा..धर्म!...वैवाहिक सम्बन्ध!...सब मिथ्या। सब पुस्तकीय.....लेकिन मुझे पुस्तक नहीं जीना अब! मुझे जीवन जीना है।".अतः इस समय के नाटककारोंने नारी समस्याओं के अनेक पहलुओं को अपने नाटकों द्वारा प्रस्तुत किया है। नारी स्वतंत्रता और नारी चेतना की धारा अब धीरे–धीरे बहने लगी।

21 वी सदी में शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण नारी की स्थिति में कुछ हद तक सकारात्मक परिवर्तन होता दिखाई देता है। किंतु आज भी कई स्थानों पर नारी को दुय्यम दर्जे का स्थान दिया जाता है। 21 वी सदी की सुप्रसिध्द महिला नाटककार 'नादिरा बब्बर' ने अपने 'जी जैसी आपकी मर्जी' इस नाटक में नारी की मन की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। हमारे समाज में कई धार्मिक मान्यताएँ है, जिसमें स्त्री का दम घुटता है। स्त्री अस्तित्व को लेकर भी इस नाटक में सवाल उठाए गए है। नारी मन की कोमल भावनाओं बड़े रोमांचक ढंग से यहाँ अभिव्यक्ति मिली है। 'विभारानी' का 'अगले जनम मोहे बिटिया न किजो' इस नाटक में नारी की विडंबनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। नाटक में आम आदमी

Scanned by CamScanner

भारतेन्दुयुगीन नाटककारों में 'बालकृष्ण भट्ट,' 'लाला श्रीनिवास दास,' 'राधाचरण गोस्वामी,' 'राधाकृष्णदास,' 'अम्बिकादत्त व्यास' आदि नाटककारों का समावेश होता है। इन नाटककारोंने नारी स्थिति को लेकर नाटक प्रहसन, रूपक लिखे हैं। जिसमें नारी संघर्ष, उतार–चढाव, नारी की दीन–हीन दशा का मार्मिक चित्रण किया है। 'प्रतापनारायण मिश्र' ने 'कलिकौतुक' नाटक में वेश्यावृत्ति जैसी सामाजिक बुराई को समाज सामने लाया। भारतेन्दु के 'नीलदेवी' नाटक की नारी तो न अबला बनकर हमारे सामने आती है, न तो पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुई। वह अपने घर को सँभालती है लेकिन परदे से बाहर निकलकर। वह अपने आपको बेबसी से मुक्ति दिलाकर स्वय में परिवर्तन लाती है और अपने पति की हत्या का बदला लेती है। 'विद्यासुंदर' इस नाटक मे भारतेन्दुने प्रेमविवाह का समर्थन किया है। हमारी पुरानी दकियानूसी रूढी परंपरा के अनुसार नारीयों को अपने मन के अनुसार वर चुनने की अनुमति नही होती। "गाय भैस की तरह उसे किसी खूंटे से बांध दिया जाता है, किसी कसाई के हाथों बेच दिया जाता है, जो उस पर मनमाने अत्याचार करता है।", 'बालकृष्ण भट्ट' के 'जैसा काम वैसा परिणाम' नाटक की नारी जागरूक है। वह अपने पति के दवारा प्रताडित किए जाने पर उसका डटकर सामना करती है, और अपने पति को नाटकिय ढंग से सही रास्ते पर लाती है। इस संदर्भ में 'भूपेन्द्र कलसीजी' का मत महत्वपूर्ण है "यह नारी नाटककार की कल्पना है। अपने युग से कहीं आगे को जिसमें मूक करूणा नही, परिस्थितियों की विवशता सी भी नाही, पर विद्रोह है और समझदारी से पुरुष का मार्ग पर लाने की क्षमता है।",

हिंदी नाट्य साहित्य में प्रसादयुग में एक नये अध्याय का आरंभ हुवा। "प्रसाद के नाटकों में उनके युग की प्रतिध्वनियाँ भी हैं। देश प्रेम और नारी स्वातंत्र्य का आंदोलन भी वहाँ चित्रित है।", इस युग में नाटककारोंने नारी के उच्च आदर्शों को नए प्रतिमान दिए। इन्होंने नारी शक्ति का सामाजिक भूमि पर प्रस्तुत करते हुए उसे भारतीय संस्कृति के महान आदर्शों से विभूषित किया है। प्रसादयुग में 'बद्रीनाथ भट्ट,' 'राधेश्याम कथावाचक', 'माखनलाल चतुर्वेदी,' 'नारायण प्रसाद' आदि नाटककारों का समावेश होता है। प्रसादयुगीन नाटकों मे नारी पात्रों मे अंतर्द्वंद्व है। इस कारण ही कहीं प्रेम है, तो कहीं देवी और कहीं आसुरी मनोवृत्ति दिखाई देती है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार "नारी पात्रों में उनके हृदय का रूप और प्राणों में बैठी हुई जिज्ञासा की टीस मिलेंगी। इस प्रकार प्रसादजीने सभी चरित्रों में अपने व्यक्तित्व की साँस फूँक दी है। स्वभावतः उनमें वह व्यक्तिगत चित्रण भी मिलेगा जो सच्चे अर्थ में नाटकीय कहा जाता है।", प्रसाद के 'ध्रुवस्वामिनी' इस नाटक में नारी जीवन गाथा के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है । इस नाटक की कथावस्तु नारी की यथास्थिति से पुर्नपरिभाषा तक की कहानी को बयाँ करती है। एक प्रकार से कहा तो यहाँ नारी का विद्रोह दिखाया है। 'ध्रुवस्वामिनी' 'रामगुप्त' से कहती है "पुरुषोंने स्त्रियों को अपनी पशु–संपत्ति समझकर उनपर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है वह मेरे साथ नहीं चल सकता।", 'पृथ्वीनाथ शर्मा' ने अपने 'साध' इस नाटक में स्त्री की उस स्थिति को दर्शाया है जो वैवाहिक बंधन को मानती है और माँ बनने से इन्कार कर देती है।

प्रसादोत्तर काल में शिक्षा के प्रचार प्रसार से जनजागरण हो रहा था और इसी कारण पुरुष और नारी के सम्बंधों में तनाव पैदा हो रहा था। इस काल का नाटककार व्यक्ति विशेष रूप से नारी संघर्षों से प्रभावित होता है। इस काल के नाटककारों के सामने नारी के दो रूप आते हैं। एक भारतीय नारी जो पुरूष और समाज के यातना भरे जाल में फँसी हुई मुक्ति की कामना करती है। और दूसरी पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता में रंगी हुई लज्जाहीन मुक्त है जो पुरूष को अपना साथी मानती है उसका उपयोग

Scanned by CamScanner

के शेखर एक जीवनी यह उपन्यास अज्ञेय की अपनी जीवनी है। इस संबंध मे शेखर एक जीवनी उपन्यास की भूमिका मे अज्ञेयजी खुद कहते है कि "शेखर मे मेरापन कुछ अधिक है। शेखर एक व्यक्ति का अभिन्नतम दस्तावेज है, यद्यपि वह साथ ही उस व्यक्ति के युग का संघर्ष का प्रतिबिंब है।"

उपन्यास की तरह अज्ञेय की कुछ मनोवैज्ञानिक कहानियाँ चर्चित है। मानसिक अन्तर्द्वन्द्वो तथा गूढ रहस्यों को परखने का यत्न अज्ञेयजी के कहानियो मे दिखाई पडता है। बाह्य परिवेश मे स्थित व्यक्ति का अकेलापन, घुटन आदि का सूक्ष्म तथा प्रभावी चित्रण इनकी कहानियो मे मिलता है। उनकी 'विपथगा', 'परंपरा', 'कोठरी की बात', 'अमरवल्लरी' आदि कहानी संग्रह विभिन्न व्यक्तित्व का उद्घाटन करनेवाले कहानी संग्रह है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखने की इस परंपरा मे 'इलाचंद्र जोशी' का नाम भी उल्लेखनिय है। इनके उपन्यासो मे वैयक्तिक कुंठाओ और मानसिक ग्रंथियो का चित्रण हुवा है। उन्होंने मूर्त या अमूर्त रूप से सूक्ष्म मनोभावो की विशेषकर यौनवशत्तियो की व्याख्या की है। इनके 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया' उपन्यासो मे व्यक्ति चरित्रो के अवचेतन की परतो को मनोवैज्ञानिक पद्धति से उभारा है। 'संन्यासी' इस उपन्यास मे 'इलाचंद्र जोशी' ने अनियंत्रित उच्छंश्खल जीवन बितानेवाले 'नन्दकिशोर' की यौनभावना को अभिव्यक्ति दी है। निर्वासित इस उपन्यास में महिप एक ही परिवार की तीन लडकियों से प्रेम करता है किन्तु विवाह किसी से नही करता। जोशीजी के प्राय: सभी मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासो मे प्रेम और वासना की प्रचंड लीलाएँ अंकित हुई है। उनके उपन्यास के सभी पात्र कुछ विशिष्ट मनोग्रंथियों के प्रतीक बनकर पाठकों के सामने आते है। उपन्यास की भाँति ही 'इलाचंद्र जोशी' ने 'फ्रायड' के मनोविश्लेषण सिध्दांत का प्रयोग अपनी कहानियों मे भी किया है। उनकी 'पतिव्रता या पिशाची', 'चरणो की दासी', 'रोगी', 'जारज', 'होली', 'परितक्त्या', 'अनाश्रित', 'रक्षितधन का अभिशाप', 'मैं', 'मेरी डायरी के दो नीरस पृष्ठ' आदि कहानियो मे मानसिक कुंठाओ, जीवन की अन्तर्बाह्य विसंगतियो व्यक्ति की अहंवृत्ति की विभिषिका चित्रण मिलता है।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास परंपरा मे 'धर्मवीर भारती' का का नाम भी लिया जा सकता है। उनका 'गुनाहो के देवता' मे भावना और वासना मे उलझे हुए व्यक्तित्व का चित्रण मिलता है। 'डॉ. देवराज' भी इसी कोटी के उपन्यासकार है। उनके 'पथ की खोज' इस उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के शिक्षित सदस्यो के जीवन की समस्याओ और मान्यताओ का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। उनके बाहर भीतर इस उपन्यास मे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक परंपराओ एवं मान्यताओ के संघर्ष का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। 'मनोहर श्याम जोशी' का 'हमजाद' भी इसी श्रेणी के तहत आता है। 'मोहन राकेश' के 'अंधेरे बंद कमरे' मे उन्होंने मानवीय संबंधो की अर्थहीनता स्त्री–पुरूष संबंध और विवाहोत जीवन की अर्थहीनता, व्यक्तिमन की छटपटाहट, तनाव घुटन, अजनबीपन आदि का चित्रण किया है। 'डॉ. नगेंद्र' ने कहा है कि "आस्थाविहीन समाज अनिश्चय की स्थिति मे लटके हुए इंसान और आत्मनिर्वासन की अभिव्यक्ति देने की पहल मोहन राकेश ने अपने अंधेरे बंद कमरे मे की है। इसके अनुसार प्रेम कोई शाश्वत – उदान्त मूल्य नही रह गया है – वैयक्तिक महत्वकांक्षाएँ और आधुनिक जीवन की सफलताएँ प्रेम की आंतरिक विवशता मे दरारे पैदा कर देती है।", उषा प्रियंवदाने 'पचपन खंबे लाल दीवारें' तथा 'रूकोगी नही राधिका' जैसे बहुचर्चित उपन्यास लिखे है। 'रूकोगी नही राधिका' मे 'इलेक्ट्रा' ग्रंथि से ग्रस्त एक भारतीय नारी की दुविधा को आधार बनाया गया है। 'कृष्णा सोबती' के 'सूरज मुखी अंधेरे', 'मित्रो मरजानी' इसी श्रेणी के उपन्यास है जिसमे स्त्री पुरूष की देह – संबध की वास्तविक भाषा को तलाशा है। एक दैहिक संबंध की पूर्णता से पहले की अतृप्ति के कारणो, मनोग्रंथियो को विश्लेषित करने में कृष्णा सोबती ने विश्लेषण की भाषा से बचकर अनुभव की भाषा का चुनाव किया है। बहुत कुछ यह एक निजी भाषा की निर्मिती है। 'मन्नू भंडारी' ने 'आपका बंटी' इस उपन्यास मे स्त्री–पुरूष के संबंध में आते बदलाव और जटिलता का अंकन करके 'जैनेंद्र' और 'अज्ञेय' की परंपरा में अपना स्थान

Scanned by CamScanner

हिंदी नाट्य साहित्य में नारी का चित्रण

पीएच.डी शोधछात्रा
कविता दत्तु चव्हाण
हिंदी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे
विश्वविद्यालय पुणे -07

नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। सभी ललित कलाओ मे नाट्यकला श्रेष्ठ है। नाटक साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें मानव जीवन सर्वांगरूप से व्यक्त होता है। नाटक एक दृश्य काव्य है, जिसे रंगमंच पर अभिनित किया जाता है। दर्शकों को रसाभिमुख करने की क्षमता नाटक मे अधिक है। यही कारण है कि 'भरतमुनि' ने इसे 'नाट्यवेद' की उपाधी से विभूषित किया है। प्राचीन काल मे रामलीला, रासलीला, नौटंकी, नाच, तमाशा आदि के द्वारा मनुष्य अपना मनोरंजन करता था। हिंदी साहित्य में 'भारतेन्दु युग' से नाटक का प्रारंभ माना जाता है।

आधुनिक काल मे नाटको की सर्जना प्रचुर मात्रा मे हुई है। हिंदी के अनेक नाटकारोने भारतीय एव पाश्चात्य नाट्यकला से प्रभाव ग्रहण करते हुए परंपरा प्रथित एवं परंपरा मुक्त दोनो प्रकार के नाटको की रचना की है। हिंदी के नाट्य साहित्य को विद्‌वानोने अध्ययन सुविधा के लिए भारतेन्दु युग, प्रसाद युग और प्रसादोत्तर युग इन तीन हिस्सों मे वर्गीकृत किया है। तीनों युग के प्रत्येक नाटककारने अपनी युगीन परिस्थिती और प्रवृत्ती के आधार पर नाट्यसृजन किया है। इस नाट्य साहित्य के नारी पात्रो पर प्रकाश डालने से हमें एक बात स्पष्ट रूप से ध्यान मे आती है, कि प्रत्येग युग मे नारी चरित्रो मे परिवर्तन आया है। मनुष्य समाज मे नारीयों को कहीं पूज्यनीय स्थान है तो कही पर उपेक्षित। वह एक लक्ष्मी है तो वह एक शक्ति भी है। वह एक ही जीवन में कहीं सारे रूपों मे जीती है। वह कभी माँ है तो कभी बेटी, कभी वह पत्नी है। हर खुशी और गम में वह अपने परिवार का साथ देती है।

हिंदी साहित्य में भी नारी को अनेक रूपों में चित्रित किया है। वेदों और पुराणों मे भी नारी को अलग-अलग रूपों में चित्रित किया है। हर युग में नारी की छवि को कही उज्ज्वल किया है तो कही धुँधला। साहित्य के विविध विधाओं में जैसे कहानी, उपन्यास, काव्य, निबंध, नाटक आदि मे साहित्यकारोने नारी के जीवन प्रवाह को अंकित किया है। आदिकाल से आजतक नारी का विभिन्न रूपों मे चित्रण हुआ है। आदिकाल में वह सामंती व्यवस्था के शिकंजे मे फँसी थी, तो मुगल काल में उसे केवल भोग की वस्तु समझा जाता था। संतो ने उसे महामाया मानकर मनुष्य के प्रगतिमार्ग में बाधा कहकर संबोधित किया है, तो सूफी कवियों ने नारी को परमात्मा का रूप माना है। रीतिकालीन कवि भी नारी को केवल भोग्य वस्तु मानते थे। दहेज प्रथा, बालविवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह निषेध, जौहर जैसी कुप्रथाओ के कारण नारी का जीवन नरक बन गया था। अतः हम कह सकते है कि नारी के विविध रूपो ने साहित्य और समाज को समय-समय पर प्रभावित किया है। हिंदी का नाट्य साहित्य भी इससे अछूता नहीं है।

भारतेन्दु युग में नारी के सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालने से एक बात स्पष्ट रूप से ध्यान मे आती है कि इस युग में नारी के सामाजिक पक्ष को अभिव्यक्ति मिली है। परंतु इस युग नाटककारों मे नारी जागरण चेतना की कमी थी। ये पुरानी परंपराओं को आगे लेकर चल रहे थे। परंतु इस समय के नाटककारों ने आनेवाले नाटककारों के लिए एक मजबूत नींव तैयार की। जिससे 'नयी रोशनी में नाटककारों ने अनुभव किया कि नारी के परंपरीत जीवन का बंधन, रूढ़ स्वरूप टूटने को है और टूटेगा।

Scanned by CamScanner

के 'विवर्त', 'व्यतीत', 'सुखदा' नामक उपन्यास के कथानकों का आधार भी यही अहं–वृत्ति तथा स्वरति है। 'जैनेंद्र' के उपन्यासों में आत्म–चिंतन के प्रकाश द्वारा पात्र अपनी मानसिक उधेड़–बुन एवं कुंठाओं को स्पष्ट करता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में यौन तत्व को प्रमुख स्थान दिया है।

अतः 'जैनेंद्र' को हिंदी की मनोवैज्ञानिक कथा–साहित्य का जन्मदाता कहे तो अत्युक्ति नहीं होगी। मनोविश्लेषणवादी उपन्यास लिखने में 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन' (अज्ञेय) का भी प्रमुख स्थान है। 'अज्ञेय' ने उपन्यास कला को एक नया शिल्प दिया। उनके उपन्यासों में यौन–भावना प्रधान है। फ्रायड के मनोविश्लेषण के अनुसार मानव जीवन को प्रेरित करनेवाली तीन मूल शक्तियो – अहं, भय और यौनवृत्ति को आधार बनाकर 'अज्ञेय' ने मनुष्य की अहमन्यता, आत्मरति, मुक्तभोग आदि का चित्रण प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यसों में कला तथा भाषा शैली, दोनों दृष्टियों से नवीन प्रयोग दिखाई पड़ते हैं। 'नदी के द्वीप' में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन हुवा है। उन्होंने इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय कुंठित जीवन के प्रतिक के रूप में 'नदी के द्वीप' की कल्पना की है। जिसप्रकार 'नदी का द्वीप' धारा से कटा हुआ होता है उसीप्रकार मध्यमवर्गीय जीवन भी समाज प्रवाह से विछिन्न है। इस उपन्यास में 'रेखा' इस पात्र के द्वारा दमित कामवासना को अभिव्यक्ति दी है। अपनी वासना को शांत करने के लिए पहले वे 'भुवन' से संबंध बनाती है। किंतु इसके पश्चात 'रेखा'जैसी अत्यंत भावुक स्त्री के लिए 'भुवन' को विनाश के गत में ढकेल देना असाध्य कार्य लगता है। भुवनने उसे क्षणिक अनुभूति प्रदान कर उसके जीवन को सार्थक बनाया। इसलिए वह दूसरा विवाह करती है। यहाँ से रेखा का जीवन भावुकता का झंझावात न होकर आँधी के बाद की शांत नवरचना है। परंतु यह आगे का जीवन केवल एक समझौता है। वह भूवन को पत्र लिखकर कहती है "यह क्या है, भूवन ? बरसों में श्रीमती हेमेन्द्र कहलाई, उसके क्या अर्थ थे ? अब अगले महिने से श्रीमती रमेशचंद्र कहलाऊँगी उसके भी क्या अर्थ है ? मैं इतना ही समझ पाती हूँ कि मेरे लिए यह एक समुचा श्रीमतीत्व लिख्या है कि मैं तुम्हारी हूँ, केवल तुम्हारी, तुम्हारी हुई हूँ और किसी की भी नहीं, न कभी हो सकूँगी। तुम्ही मेरे गर्व हो, तुम्हारे ही स्पर्श सकल मम देह–मन–वीणा मन बाजे।"

अतः स्पष्ट होता है कि शारीरिक तौर पर रेखा अपने को भुवन से अलग कर लेती है परंतु मानसिक तौर पर नहीं। वह दूसरे विवाह के बाद भी भुवन से प्रेम करती है। 'अपने अपने अजनबी' यह उपन्यास यूरोप के परिवेश में घटित कल्पित घटनाओं पर आधारित एक असाधारण कृति है। इसमें व्यक्ति का अकेलापन, बेगानगी, मृत्युबोध, अजनबीपन आदि का चित्रण हुवा है।

'शेखर एक जीवनी' 'अज्ञेय' का बहुचर्चित उपन्यास है जो दो भागों में विभक्त है। इस उपन्यास में दमित काम वासना–जनित आक्रमक प्रवृत्तियों को हम देख सकते है। स्वयं अपनी वासना को दमित रखनेवाला 'शेखर' 'शशि' से प्यार करते हुए भी उसके प्रति दया या सहानुभूति नहीं दिखाता। मूलतः इस उपन्यास में व्यक्ति–स्वातंत्र्य की समस्या उठाई गई है। स्वतंत्रता की खोज में शेखर अपने आंतरिक संघर्षों से झूझता है, किंतु अपने निषेधात्मक रोमांटिक विद्रोह को लेकर वह बहिर्मुखी नहीं हो पाता। अज्ञेय एक विद्रोही लेखक होने के नाते और शेखर भी एक विद्रोही पात्र होने के नाते मनोविज्ञान के सैध्दांतिक प्रभाव को नकारते भी है। यह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट होता है। "प्रायः लोग संतान पर माँ के प्रभाव की बात करते है। बहुतों का विश्वास है कि सभी असाधारण व्यक्तित्व पर माँ का प्रभाव रहा होता है। अच्छे या बुरे उनके लिए साधारण नहीं है। वे सुलग नहीं सकते फट सकते है।"

शेखर एक विद्रोही और आक्रमक पुरुष है और उसके मन में हजारों सवाल है, और उत्तर न मिलने के कारण उससे उत्पन्न घनिभूत वेदना और पीड़ा का वह अनुभव करता है। अज्ञेयजीने स्वयं उपन्यास के बारे में कहा है शेखर एक जीवनी घनीभूत वेदना का केवल एक रात में देखे गए 'विजन' को शब्दबध्द करने का प्रयास है। प्रायः पाठकों का मत है

Scanned by CamScanner

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - I
January - March - 2020
HINDI PART - II

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Scanned by CamScanner

4. मीडिया कालीन हिंदी स्वरूप और समावनाए – अर्जुन चव्हाण, पृ. सं. 47
5. वही – पृ. सं. 51
6. वही – पृ. सं. 52
7. वही – पृ. सं. 52
8. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
9. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रासंगिकता एव परिदृश्य – डॉ. मु. नागलक्ष्मी

Scanned by CamScanner

38. सरकारी कार्यालय में हिंदी की आवश्यकता........................	डॉ.प्रविण तुळशीराम तुपे	118
39. जनसंचार एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता....... विज्ञापनों में हिंदी भाषा का सशक्त योगदान	कांचन शेंडुर्णीकर ,	120
40. जनसंचार के माध्यम : विज्ञापन और हिंदी........................	डॉ योगेश विठ्ठल दाणे	123
41. हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृष्य	डॉ. भाउसाहेब नवले	127
42. मीडिया, समाज और हिंदी	डॉ. मिलिंद कांबळे	130
43. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	सौ. योगिता अमोल देशपांडे	132
44. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी	कु. छाया रत्नाकर पांढरकर	134
45. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं हिंदी अध्यापन	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	137
46. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	श्रीम. जयश्री अर्जुन माचेसुळ	139
47. हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ	प्रा.पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत	142
48. हिन्दी के विकास में नवइलेक्ट्रानिक माध्यमों का योगदान	आर. अरुणा	145
49. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	अश्विनी महादेव जाधव	148
50. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी भाषा (मुद्रित, श्रव्य, दृकश्रव्य माध्यम)......	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	150
51. इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम और हिंदी........................	सौ. विद्या शामराव धोंगते	153
52. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	अंबेकर वसीम	156
53. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	प्रा. शोभा कोकाटे	159
54. जनसंचार माध्यमों में रेडियो	राजेंद्र विट्ठल वरप	161
55. विज्ञापन : जनसंचार का सशक्त माध्यम........................	प्रा. बी. एस. भुजाडे	163
56. हिंदी के विकास में टेलिविजन का योगदान........................	सरला सूर्यभान तुपे	165
57. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी (मुद्रित, श्रव्य, दृक श्रव्य)	कविता दत्तु चव्हाण	167
58. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	अविनाश म्हस्की कोल्हे	170
59. जनसंचार माध्यम में हिंदी : रोजगार के अवसर	डॉ. शरद भा. कोलते	172
60. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	श्रीगीरे जयश्री बालाजी	175
61. जनसंचार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. रवीन्द्र सिंह	180
62. जनसंचार एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विविध आयाम–एक दृष्टि....	डॉ. प्रीति आत्रेय	183
63. जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपादेयता........................	डॉ. भगत सारिका	185
64. हिंदी फिल्म, साहित्य व समाज	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	188
65. जनसंचार के माध्यम प्रिंट मीडिया के विकास में हिन्दी का योगदान.....	डॉ. अर्चना चतुर्वेदी	190
66. इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया और हिंदी	डॉ. नानासाहेब जावळे	192
67. नव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी .... (कम्प्यूटर और इंटरनेट प्रणाली के विशेष संदर्भ में)	गणेश ताराचंद खैरे	195
68. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता........................ (विज्ञापन के संदर्भ में)	प्रा. डॉ. मनाली सुर्यवंशी	198
69. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	प्रा. संदिप बळवंत देवरे	201
70. जनसंचार - माध्यम और सामाजिक जागरूकता........................	प्रा. डॉ. व्ही. डी. सुर्यवंशी	203
71. भारत में हिंदी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. जालिंदर इंगले	206
72. अनुवाद : समकालीन संदर्भ में	डॉ. धन्या. के. एम	208
73. हिंदी जनसंचार माध्यम एवं रोजगार के अवसर........................	डॉ.राजाराम कानडे	210
74. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	213

Scanned by CamScanner

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२४. जनसंचार माध्यमों की हिंदी

कविता दत्तु चव्हाण
शोधछात्रा, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे - ०७

विश्वभर में आज हिंदी भाषा छाई है। हिंदी भाषा दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा है। दुनिया में सर्वप्रथम संस्कृत भाषा का निर्माण हुवा, उसके बाद देवनागरी लिपि जो हिंदी के नाम से जानी जाती है। हिंदी का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इस भाषा में त्रुटि बिल्कुल भी नहीं है। ये जैसे बोली जाती है वैसी ही सोची और समझी जाती है। आज के समय में हिंदी विश्व की सबसे प्रसिद्ध भाषाओं में से एक है। भारत के अधिकतर लोग हिंदी बोलते हैं, समझते हैं, लिखते हैं। हिंदी का बढ़ता प्रचार प्रसार देखकर ही संचार माध्यमों ने भी हिंदी भाषा को लोगों तक पहुँचने का जरिया बनाया है।

मानव जीवन की उत्क्रांति के समानांतर ही जनसंचार माध्यमों की उत्क्रांति माननी पड़ेगी। मानव जीवन के विकास के साथ ही संचार माध्यमो ने अपनी विकास की निरंतरता को जारी रखा। उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदी ने मानव तथा संचार माध्यम दोनों को उन्नति की नई–नई राहे प्रदान की और इक्कीसवीं सदी ने तो उन्हें चरम सीमा पर पहुँचाया है। भूमंडलीकरण की इस दुनिया में अब जनसंचार के विविध आयाम को जन्म दिया है। मीडिया बाजार की आवश्यकता है और हिंदी भाषा मीडिया की। अब हिंदी की नीति–नियंता केंद्र सरकार का राजभाषा विभाग ही नहीं बल्कि मीडिया भी कहना होगा। अंग्रेजी में संचार को Communication कहते है। जो लैटिन के Communis से बना है जिसका अर्थ है, "किसी वस्तु या विषय का सबके लिए साझा होना।" संचार एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों मनोवृत्तियों में सहभागी होता है। वे समस्त विधियों को संचार कहते हैं, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे को प्रभावित करता है। अभिव्यक्ति के उन सभी रूपों को संचार कहते हैं जो पारस्परिक समझदारी के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। संचार को परिभाषित करते हुए 'पीटर लीटल' कहते हैं, "Communication is The Process by Which Information is Transmitted Between Individuals and Organizations so That an UnderstandingResponse Results"[2] अर्थात संचार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्तियों और संगठनों के बीच सूचना प्रसारित की जाती है ताकि एक समझ प्रतिक्रिया परिणाम प्राप्त हो। 'जॉर्ज एमिलर' जनसंचार को परिभाषित करते हुए कहते हैं "जनसंचार का अर्थ सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है।"[3]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि संचार एक प्रकिया है जिसमें दो या दो से अधिक लोगों के बीच विचार, अनुभव, तथ्य और प्रभाव का आदान प्रदान होता है। जनसंचार माध्यम के मुख्यतः दो भेद करने होंगे। एक मुद्रित संचार माध्यम – जिसके अंतर्गत समाचार पत्र और सभी नियतकालिक, पॅम्पलेट आदि का समावेश होता है। एक है, श्रव्य संचार माध्यम। इसके दूसरा भेद है इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम। इसके भी दो भेद किए जाते हैं।

Scanned by CamScanner

विश्व के सुप्रसिद्ध रेडियो स्टेशन बी. बी. सी, लन्दन, वायस ऑफ अमेरिका, रेडियो सिलोन, ऑल रेडियो स्टेशन एवं विश्व के अन्य रेडियो स्टेशनों पर एफ. एम पर हिंदी में विज्ञापनों का निरंतर प्रसारण किया जाता है। अतः कह सकते है कि हिंदी भाषा मीडिया के बल पर धीरे–धीरे समृद्ध होकर विश्वभाषा बनने जा रही है। विज्ञापन के प्रमुख माध्यम होते है, मुद्रित, श्रव्य और दृकश्रव्य आदि।

मुद्रित माध्यम – ये विज्ञापन देखे एवं पढ़े जा सकते है। इन विज्ञापनों को जानने के लिए पाठक का शिक्षित होना अनिवार्य नहीं है। विभिन्न रंगों एवं चित्रों के संयोजन से संदेश को आकर्षक रूप में पाठकों के समक्ष दृश्य माध्यम द्वारा प्रस्तुत करते है। समाचार पत्र, पत्रिका, पॅम्पलेट, होर्डिंग्ज, बॅनर आदि में ये मुद्रित विज्ञापन दिए जाते है। समाचार पत्रों में स्थानीय उपहार, औदयोगिक, सूचनाप्रद, राजनैतिक, वित्तिय आदि कई तरह के विज्ञापन देखे जा सकते है। समाचार पत्र आज हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गया है। हर पढ़े–लिखे व्यक्ति के दिन की शुरूवात समाचार पत्र पढ़ने से होती है। ये समाचारपत्रवाले निर्धारित शुल्क लेकर समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित करते है। अब हर व्यक्ति अंग्रेजी भाषा नहीं जानता, या अन्य प्रादेशिक भाषाएँ तो नहीं सीख सकता है। ऐसे में लोगों तक पहुँचने का एकमात्र जरिया है हिंदी भाषा जिसे हर व्यक्ति समझ सकता है बोल सकता है। अपना विज्ञापन समाज के हर तबके के लोगों तक पहुँचे इसलिए समाचारपत्रवाले हो या पत्र–पत्रिका या होर्डिंगवाले हिंदी भाषा में विज्ञापन प्रकाशित करते है।

श्रव्य माध्यम–श्रव्य माध्यमों में आकाशवाणी, दूरभाष, श्रव्य कॅसेट, सीडीं, लाऊडस्पीकर आदि का समावेश होता है। श्रव्य माध्यमों में विज्ञापन वाणी पर आश्रित होते है। जिसमें स्वरों का आरोह– अवरोह, शब्दों की विभिन्न भंगिमाएँ, भाषा का लचीलापन आवश्यक है। इन विज्ञापनों का तालमेल संगीत के साथ रहता है। इसलिए यह श्रोताओं पर अधिक प्रभाव छोड़ता है। इन विज्ञापनों में प्रयुक्त संवाद, गीत या मुहावरे तो अक्सर लोगों के जुबान पर रहते है।

जैसे

"लाइफबॉय है जहाँ तन्दुरूस्ती है वहाँ।"
"असली मसाले सच–सच एमडी.एच।"
"सुनो सुनाओ लाइफ बनाओ ९२.७ एफ.एम बजाओ।"
"ठंडा मतलब कोको कोला।"
"हर व्यंजन बने सेहतमंद न्यूट्रीला के संग।"
"त्वचा की रक्षा करे बोरोलिन।"
"जो बीवी से करे प्यार वो प्रेस्टीज से कैसे करे इंकार।"

इन सभी विज्ञापनों की भाषा हिंदी है और हिंदी भाषा होने के कारण इसमें लयबद्धता, तुकबंदी, संगीतात्मकता का अच्छा समीकरण देखने को मिलता है। जिससे विज्ञापन आकर्षक एवं रोचक लगते है।

दृकश्रव्य विज्ञापन – दृकश्रव्य माध्यमों में कुछ विज्ञापनों को हम लिखित रूप में देख सकते है तो कुछ विज्ञापनों को सुनते तथा कलाकारों के अभिनय को देखते है। इन माध्यमों में दूरदर्शन, सीडी–दृश्य कॅसेट, चलचित्र के द्वारा विज्ञापन का अत्यधिक प्रसारण होता है। मोबाईल, कम्प्यूटर व इंटरनेट के जरिये लाखों, करोड़ों ग्राहकों तक कुछ मिनिटों में विज्ञापन पहुँचाया जा सकता है। विज्ञापन को प्रभावशाली, आकर्षक एवं रोचक बनाने के लिए मुद्रित शब्दों, पात्रों के अभिनय, संवाद, संगीत की सहायता ली जाती है। जनहित में जारी विज्ञापन, स्वास्थ्य मंत्रालय, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन आदि में अभिनय के साथ मुद्रित शब्दों का प्रयोग भी होता है।

जैसे: १) "बिजली है शक्ति, इसे व्यर्थ न गँवाओ,
जितनी जरूरत है, उतनी जलाओ"
२) "पूरब से सूर्य उगा, फैला उजियारा,
जागी हर दिशा–दिशा जागा जग सारा।"

इन विज्ञापनों में तुकबंदी, लयात्मकता, संगीतात्मकता है जिससे ये अधिक आकर्षक, रोचक एवं पठनीय है। इन विज्ञापनों के सफल होने के पीछे एकमात्र कारण है कि इन विज्ञापनों की भाषा हिंदी है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि आजकल हिंदी भाषा विज्ञापन जगत पर छाई हुई है। हरेक व्यावसायिक कंपनिया अपने उत्पादों का विज्ञापन हिंदी में देने के लिए आतुर है। हिंदी भाषा के विज्ञापन सरल, सुगम एवं पठनीय होते है। वाक्य छोटे– छोटे और आम बोलचाल की भाषा में होते हैं। शब्दों के उच्चारण में नाटकियता के कारण थोड़े ही शब्दों में श्रोता, पाठक तक अपना संदेश पहुँचाया जाता है। विज्ञापनों की हिंदी में मुहावरे, उपमाओं, अलंकार, कहावतों, तुकबंदियों का आकर्षकता से प्रयोग किया जाता है। भाषा में संवादात्मकता, नाटकियता, पद्यात्मकता और लयात्मक भाषा से विज्ञापन आकर्षक लगते है। आकर्षक भाषा ही विज्ञापन का

Scanned by CamScanner

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019
SPECIAL ISSUE – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. Anil Kale
Asso.Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune
(Maharashtra)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 400/-

Scanned by CamScanner

Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019 Special Issue – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of this Issue
Dr. Anil Kale
Asso. Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
Visit to - www.researchjourney.net

RESEARCHJOURNEY

Scanned by CamScanner

अंतर्गत वे साधन आते हैं, जो श्रवण इंद्रिय द्वारा अवबोध कराते हैं। इसमें सबसे प्रमुख रेडियो है। साथ ही ऑडियो कॅसेटस, टेपरेकॉर्डर आदि। दूसरा भेद दृश्य श्रव्य माध्यम है इसमें वे सब संचार माध्यम आते हैं, जो क आँखों और कानों द्वारा अवबोध कराते हैं। इसमें फिल्म, दूरदर्शन कई नीजी चैनल और वीडियो आदि आते हैं। संगणक, इंटरनेट, ईमेल, वाईस मेल, दूरवाणी, भ्रमणध्वनी और ई कॉमर्स आदि को इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रखा होगा कि जिनके विकास का कोई अंतिम रूप बताया नहीं जा सकता। सभी संचार माध्यमों की भाषा ज्यादाह पैमाने में हिंदी ही है।

जनसंचार माध्यमों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इन सभी संचार माध्यम ज्यादाह पैमाने में हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं, क्योंकि भारत में एकमेव हिंदी ही ऐसी भाषा है, जिसे सभी लोग समझते हैं, हिंदी बोलना, पढ़ना जानते हैं। एक तरह से कहें तो लोगों के विचारों को आदान–प्रदान करनेवाली भाषा हिंदी ही है। यही वजह है कि मीडियाने अपना संदेश जनसमुदाय तक पहुँचाने के लिए हिंदी का प्रयोग किया है। हम सबसे पहले बात करेंगे मुद्रित माध्यमों की। मुद्रित जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पॅम्पलेट आते हैं। इन समाचार पत्रों में विश्वभर की जानकारी हमें मिल जाती है। भारत में ज्यादातौर पर लोग अंग्रेजी भाषा बोलना नहीं जानते ना समझते हैं। इसलिए जनता तक पहुँचने का एकमेव जरिया है, हिंदी। समाचार पत्रों में खासकर दैनिक समाचार, हिन्दुस्तान, चौथी दुनिया, नई दुनिया, आज का आनंद, प्रभात खबर, अमर उजाला आदि समाचार पत्र हिंदी में ही अपना संदेश जन–जन तक पहुँचाते हैं। कई सारी पत्रिकाएँ निकलती हैं, जिनकी भाषा परिनिष्ठित हिंदी ही है। इन पत्रिकाओं के द्वारा पाठकों के सामने एक शुध्द हिंदी भाषा का रूप आता है, जो निहायति आनेवाली पीढ़ी को परिनिष्ठित हिंदी बोलने समझने में सहायक होगा। 'वागर्थ', 'राष्ट्रवाणी', 'हंस', 'ज्ञान वितरणम्', 'सरस्वती' आदि पत्रिकाएँ निसंदेह हिंदी के नए साहित्यकारों को जन्म देगी। अतः निष्कर्षतः हिंदी के प्रचार प्रसार में इन समाचार पत्र और पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है।

हम बात करते हैं श्रव्य माध्यम रेडियो की। आझादी के पहले ही नहीं आझादी के बाद और बीसवीं और इक्कीसवी सदी में रेडियोने जनसंचार माध्यमों के रूप में अपनी अहमियत को बरकरार रखा है, भारत में 80 प्रतिशत लोग गाँव में बसते हैं, उसमें से लगभग 20 से 30 प्रतिशत लोग अनपढ़ है। ऐसे लोगों तक हर प्रकार की सरकारी योजना, संदेश पहुँचाने का काम किया है रेडियोने। क्योंकि लोग पढ़ना नहीं जानते पर सुन सकते हैं। रेडियोने राष्ट्रभाषा को जनसंचार का माध्यम चुना है। हिंदी भाषा को भारत का हर एक पढ़ा–लिखा और अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकता है, बोल सकता है। भारत में देहाती आदमी से लेकर महानगरों में बँसे उद्योगपति, उच्च वेतनभोगी भी इस आवाज की दुनिया के दोस्त पर फिदा है। महलों से लेकर झुग्गी झोपडियों तक रेडियो पहुँचा है। बच्चे से लेकर बूढ़ों तक सभी इस रेडियो के दिवाने हैं। रेडियो की उपयोगिता एवं लोकप्रियता दैनिक समाचार, बाजार समाचार, नाटक लघुनाटक, संगीत, क्रिडा, साक्षात्कार, साहित्य, समाज संस्कृति विषयक विभिन्न कार्यकमों के कारण बढ़ती गई। परंतु इसकी लोकप्रियता का एकमेव कारण इसकी भाषा। कहना जरूरी नहीं है कि राष्ट्रीय स्तर पर इसका श्रेय हिंदी को जाता है। रेडियो कई प्रादेशिक भाषाओं के साथ साथ हिंदी को समान रूप से अपनाता आया

Scanned by CamScanner

...है। जिससे उपभोक्ता आकृष्ट होते हैं। विज्ञापनों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग देखकर हम ये निश्चित कह ...ते है कि हिंदी अब विश्वभाषा बनने की ओर अग्रेसर हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ —

...के सिद्धांत — एन. सी. पंत
...कालीन हिंदी स्वरूप एवं संभावनाएं — डॉ. अर्जुन चव्हाण
प्रयोजनमूलक हिंदी प्रासंगिकता एवं परिदृश्य — डॉ. मु. नागलक्ष्मी
...जनसंचार माध्यम और सामाजिक परिवर्तन — डॉ. अनिरुद्ध पुरोहित
...की दुनिया — कुमुद पुरोहित
www.google.com

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१३	विज्ञापन के क्षेत्र **रंजना वामनराव बिरादार**	५५-६०
१४	जनसंचार माध्यम और हिंदी **प्रो. ए. जे. भेवले**	६१-६२
१५	बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग **प्रो. डॉ. दीपक विनायकराव पवार**	६३-६५
१६	नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और हिंदी **प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण**	६६-७२
१७	संगणक और हिंदी **डॉ. शंकर रा. पजई**	७३-७५
१८	जनसंचार माध्यमों में कम्प्यूटर का प्रयोग **प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड**	७६-७९
१९	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार और महत्व **डॉ. एस. एस. उप्पे**	८०-८१
२०	हिंदी प्रचार-प्रसार में जन संचार माध्यमों की भूमिका **डॉ. वंदन बापुराव जाधव**	८२-८४
२१	भूमण्डलीकरण के परिदृश्य में हिंदी अनुवाद क्षेत्र के बढ़ते कदम **डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे**	८५-८९
२२	हिंदी भाषा और रोजगार **प्रा. डॉ. विरनाथ पांडूरंग हुमनाबादे**	९०-९२
२३	जनसंचार माध्यमों की हिन्दी **प्रा. रऊफ इब्राहिम महंमद**	९३-९५
२४	जनसंचार माध्यमों की हिंदी **कविता दत्तु चव्हाण**	९६-१०१
२५	रोजगारोन्मुख हिंदी **शेख मोहसीन इब्राहीम**	१०२-१

इन फिल्मोंने ही हिंदी को जनता की जुबाँ पर स्थापित करने का उनके दिलों को जीतने का काम किया है। 'कमलेश्वरजी' का कहना है कि 'सिनेमा जनसंचार और मनोरंजन की कला है। उसका जन के साथ जुड़ाव उसकी प्रकृति में है। वह एक साथ समाज के विविध लोगों, बच्चे–बूढ़े, अमीर, गरीब औरत, मर्द, हिंदू, मुसलमान सब को एक साथ दिखाई देता है।"[6] देशभक्तिपर फिल्में हो या प्रेमपरक ये मानव मन में निहित संवेदना को चुनौति देती है। ये कमाल फिल्म का भी है और उसकी भाषा हिंदी का भी। ऐसी ही सफलता प्राप्त फिल्म है, 'शोले' जिसके संवाद आज भी लोगों के जुबाँ पर है। "अरे ओ सांभा कितने आदमी थे ? सरदार तीन...।"[7] हिंदी भाषा में लिखे ये संवाद आज भी अजरामर है। अतः हिंदी को जनता के जुबाँ पर स्थापित करने का प्रयास फिल्मों ने किया है।

हिंदी को विश्व भाषा बनाने में इंटरनेट, ईमेल, ई कॉमर्स की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि सैकड़ों पत्र–पत्रिकाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध है। बाजार में स्पर्धा के कारण ही क्यों न हो लेकिन अंग्रेजी चैनलों का हिंदी में रूपांतरण हो रहा है। आज हर एक के हाथ में स्मार्टफोन है और उसमें हिंदी। सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिंदी में संदेश भेजना, हिंदी की सामग्री को पढ़ना, सुनना, देखना लगभग उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी को। आज मोबाईल ने हिंदी के प्रयोग को अचानक जो गति दी है उसकी कल्पना शायद किसीने न की होगी। इंटरनेट पर अंग्रेजी के 19 फिसदी सालाना मुकाबले में भारतीय भाषाओं या हिंदी की सामग्री 90 फिसदी रफ्तार से बढ़ रही है। आज के समय मे हिंदी के एक लाख से भी ज्यादाह ब्लॉग सक्रिय है। भारतीय युवाओं के हाथ में जो स्मार्टफोन होता है, उसमें औसतन 32 एप होते है जिसमें 8–9 हिंदी के ही होते हैं। यहाँ तक की भारतीय युवा युट्युब पर 93 फिसदी वीडियो हिंदी में देखते है। ई–कॉमर्स में इंटरनेट के माध्यम से व्यापार संचलन किया जाता है। अपना उत्पादन घर–घर तक पहुँचाने के लिए लोग हिंदी भाषा का प्रयोग इसमें ज्यादाह पैमाने पर करते है। बैंको में भी एक हिंदी अधिकारी होता है। जो बैंको की योजनाएँ हिंदी भाषा में आम जनता, किसान, मजदूरों तक पहुँचाते है।

निष्कर्षत

कहना गलत न होगा कि हिंदी को जनता की जुबाँ, दिलो–दिमाग और सर–आँखों पर सजाने का काम जनसंचार माध्यमोंने किया है। इन्हीं संचार माध्यमों के कारण लोग हिंदी सीखना और बोलना पसंद करते हैं। हिंदी भाषा के प्रति लोगों की रूचि बढ़ रही है इसका निसंदेह श्रेय जनसंचार माध्यमों को जाता है। परंतु दूसरी ओर हम देखते हैं कि राजभाषा के रूप में हिंदी आज भी उपेक्षित है, किन्तु जनभाषा के रूप में उसका कोई हाथ नही पकड़ सकता। इसमें एहं भूमिका जनसंचार माध्यमोंने निभाई है। बस अब मीडिया का उपयोग उसे राजभाषा के रूप में स्थापित करने में होगा तो निसंदेह उसमें राष्ट्र का कल्याण होगा। क्योंकि ये जनसंचार माध्यम ही ऐसे साधन है जोकि अधिकार में वंचित हिंदी को वांछित रूप में स्थापित करने की ताकत रखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ. सं. 17
2. वही – पृ. सं. 17
3. वही – पृ. सं. 19

Scanned by CamScanner

विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी (मुद्रित, श्रव्य, दृक श्रव्य)

सुनीता दत्तु चव्हाण
शोधछात्र, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे, विश्वविद्यालय पुणे

'विज्ञापन' यह शब्द अंग्रेजी के 'एडवरटाइजमेंट' का हिंदी अनुवाद है। जिसका अर्थ होता है, सार्वजनिक सूचना, सार्वजनिक घोषणा या ध्यानाकर्षण । विज्ञापन यह शब्द दो शब्दों के योग से बना है, वि+ज्ञापन , 'वि' उपसर्ग है, जिसका अर्थ होता है 'विशेष'। 'ज्ञापन' का अर्थ होता है, सूचना का ज्ञान, इसका मिश्रित अर्थ है, सामान्य रूप से किसी वस्तु या तथ्य की विशेष जानकारी। विज्ञापन को प्राय: विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है। विज्ञापन को परिभाषित करते हुए 'डॉ. कुलश्रेष्ठजी' कहते है, "विज्ञापन प्रचार का ऐसा साधन है, जो बिना किसी राजनीतिक, धार्मिक या सांप्रदायिक खचांव के जनता या उपभोक्ता में अपने लिए आवश्यकता या रूझान उत्पन्न करता है तथा अपनी उत्तमता और उपयोगिता की बातें दुहराकर उपभोक्ता की क्रय सामर्थ्य का विकास करता है"। 'द न्यू एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में विज्ञापन को इस प्रकार परिभाषित किया है, "विज्ञापन संप्रेषण का प्रकार है जो उत्पादक और कार्य को उन्नत करने, जनमत को प्रभावित करने, राजनैतिक सहयोग प्राप्त करने, एक विशिष्ट कारण को आगे बढ़ाने अथवा विज्ञापनदाता द्वारा कुछ इच्छित प्रतिक्रियाओं को प्रकाशित करने का उद्देश रखता है"। 'डॉ. बलदेवराज गुप्ते' विज्ञापन की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है, "विज्ञापन किसी उत्पाद, किसी विचार या रेखा के विक्रय का सर्वोत्तम संदेश है जो कम से कम खर्च मे उपभोक्ताओं तक पहुँचाया जाए।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि विज्ञापन से आशय ऐसे दृश्य, लिखित या मौखिक तथा अवैयक्तिक संदेशों से है जो किसी भी धर्म, जाति, संप्रदाय का सहारा न लेते हुए अपनी उपयोगिता और उत्तमता को जनता तक पहुँचाता है और उन्हें क्रय करने के लिए प्रेरित करता है।

आधुनिक युग में विज्ञापनो का अनन्य साधारण महत्व है। इन विज्ञापनो का प्रभाव लोगों के दिलो – दिमाग पर छाया हुआ है। कोई भी प्रचार माध्यम हो विज्ञापन सब जगह देखे जा सकते है। समाचार हो या पत्र – पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमाघर, नगर की सडको पर, चौराहो पर हर तरफ विज्ञापनों की भरमार होती है। एक तरह से कहे तो आज हम विज्ञापनों के युग में जी रहे है। हमारी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक माँगे इतनी बढ़ गई है कि विज्ञापन का स्थान अनिवार्य – सा हो गया है।

उदा : फूलों की दुकान के नजदीक जाते ही हम फूलों की खुशबू से पहचान लेते है कि यहाँ आस-- पास फूलों की दूकान होगी। पर जो लोग उन दूकानों की ओर जाते ही नही और जिन्हे पता ही नहीं कि दूकान कहा है, ऐसे लोगों को दूकान का विज्ञापन ही उसके बारे में सूचना देता है।

विज्ञापित सामग्री के आधारपर विज्ञापन के दो प्रकार है १) व्यापारिक विज्ञापन २) सूचनापरक विज्ञापन। व्यापारिक विज्ञापन वस्तुओं की विशेषता बताकर उनकी बिक्री बढ़ाते है परंतु सूचनापरक विज्ञापन जनता में किसी विचार सेवा का प्रभाव उत्पन्न करने के उददेश्य से बनाए जाते है। स्पष्ट है

"advertisment are not only for products like fan or soap, banking is service offerd and donate youre eye,compaign is idea adverted."

अर्थात विज्ञापन न केवल प्रशंसक या साबुन जैसे उत्पादों के लिए है, बैंकिग एक सेवा है और अपनी आँख दान करें, अभियान है, एक विचार है। विज्ञापन की सफलता के लिए आवश्यक है उसकी भाषा रोचक, स्पष्ट, सरल तथा आम बोलचाल की भाषा जैसी हो। ताकि सामान्यजन एव संबंधित ग्राहक उसे समझ सके।

आज के इस युग में दूकानों की होड लगी है, ऐसे मे कोई अपने चीज का विज्ञापन न दे तो व्यापार चलेगा कैसे ? इसलिए आज व्यावसायिक जगत में और सरकार भी विज्ञापन के सहारे ही अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। इन विज्ञापनों की भाषा पर हम गौरतलब करे तो अधिकतर विज्ञापनों की भाषा हिंदी ही है। इसके पीछे का प्रमुख कारण है कि हिंदी भाषा आज जन–जन का कंठहार बन चुकी है। हिंदुस्तान की की राष्ट्रभाषा हिंदी है और बिना हिंदी के जन–जन तक पहुँचना असंभव है। शब्दभंडार, व्याकरण, और साहित्य सभी दृष्टियों से हिंदी भाषा समृद्ध है और यही कारण है कि हिंदी का व्यापक प्रयोग जनसंचार माध्यमों को आज अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्में, समाचार–पत्र पत्रिकाएँ एवं इंटरनेट इन माध्यमों में विज्ञापन का विशेष स्थान है। हिंदी मे विज्ञापनों ने इन माध्यमों को नई जीवन्तता प्रदान की है। हिंदी भाषा में जो लयबद्धता, तुकबंदी, मुहावरे और लोकोक्तियाँ है उसे सामान्य जन आसानी से ग्रहण कर लेता है। इस भाषा में जो मिठास है वह अन्य किसी भाषा में नहीं है और यही वजह है कि छोटी से लेकर बडी व्यावसायिक कंपनियाँ अपने उत्पाद का विज्ञापन हिंदी में देने को उत्सुक है।

Scanned by CamScanner

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
uary - March - 2020
NDI PART - II

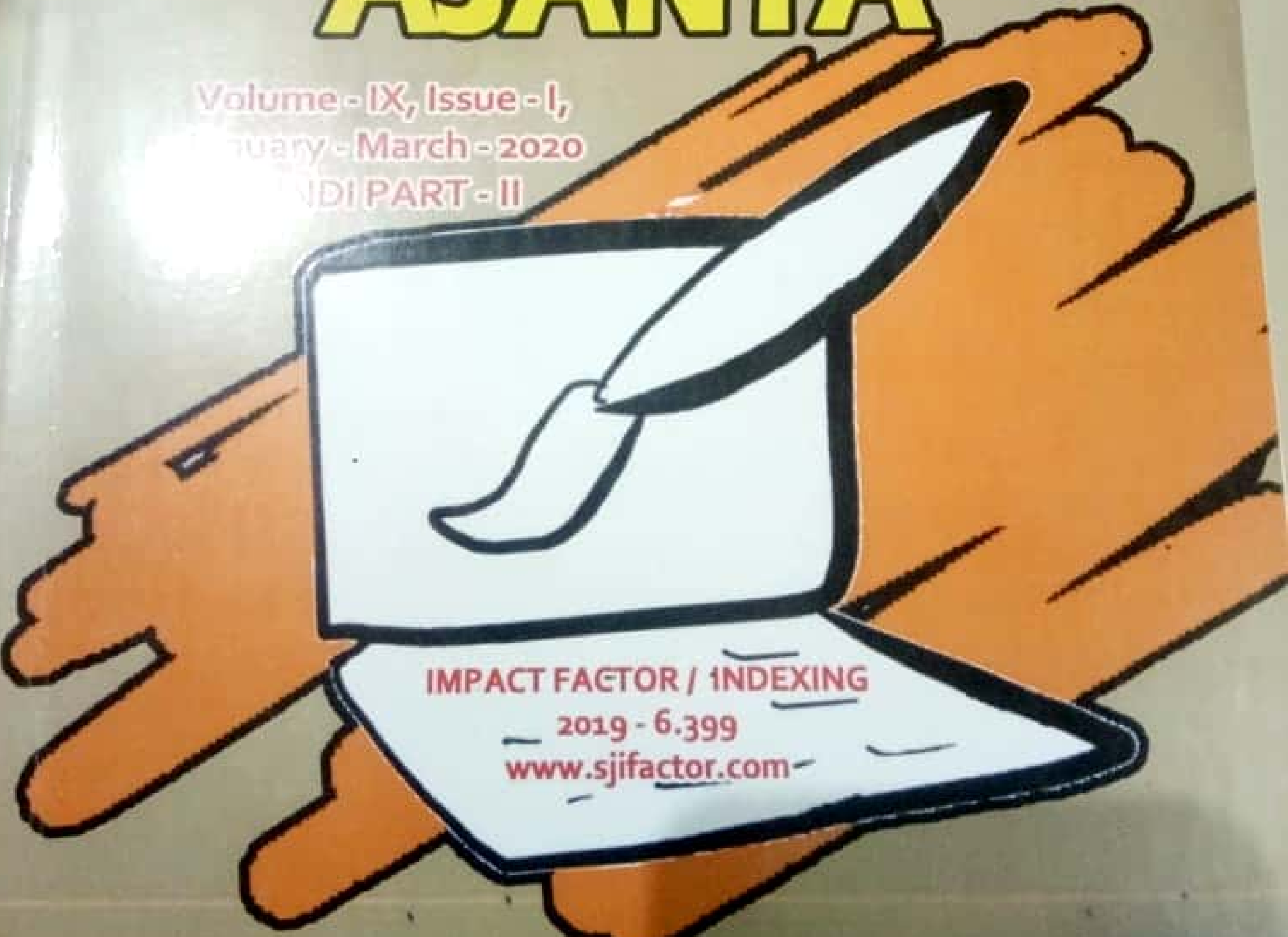

Ajanta Prakashan

Scanned by CamScanner

है। रेडियोने देशभर में हिंदी के श्रोता बनाए है। इस तरह हिंदी भाषा को पेश किया है कि लोग हिंदी को सुनने के लिए लालायित होते है। साथी आज के समय में कई सारे एफ. एम चैनल आए है जो सरकारी योजनाएँ सन्देश तथा हिंदी फील्मी गीतों का प्रसारण लगातार करते है। इस भागदौड़ भरी जिंदगी में चलते, सफर करते रेडियो सुनना पसंद करते हैं। ताकि जिंदगी अपडेट भी रहें और मनोरंजन भी हो। यही कारण है कि रेडियो के श्रोताओं की संख्या दिन–ब–दिन भी बढ़ती जाती है। इस संदर्भ में रेडियो से जुड़े 'लीलाधार मंडलोई' की मान्यता सही है कि 'अकेली दिल्ली प्रांत में प्रति व्यक्ति श्रोताओं का झुकाव टी.वी के 139 प्रतिदिन की तुलना में रेडियो के पक्ष में 118 मिनट अकालित किया गया है। यह एक गौरवपूर्ण बदलाव है। 'अमिन सयानी' फिर एक बार सुर्खियां में है, बाजार का रूख भी कुछ खास उत्पादों के विक्रय को लेकर रेडियो की तरफ तेजी से मुड़ा है।"[4]

रेडियो के जरिये हिंदी भाषाने भौगोलिक सीमाओं को पार किया है। इसके माध्यम से ही हिंदी विदेशों तक पहुँच गई है। बी.बी.सी लंदन तक हिंदी भाषाने रेडियो की सहायता से अपनी जड़े और शाखाएँ फैला दी है। न केवल हिंदी के वर्तमान को सुगठित करने में बल्कि उसका भविष्य उज्ज्वल बनाने में भी रेडियो का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

अब दृक श्रव्य माध्यम के बारे में बात करेंगे। हिंदी को जनजीवन तक पहुँचाने में दूरदर्शन सबसे प्रभावी साधन सिद्ध हुवा है। ध्वनी और दृश्य के माध्यम का जादुई नजारा लेकर आनेवाला यह संचार साधन जन–जन की आवश्यकता बन गया है। शहरों, नगरों, महानगरों की गदी बस्तियां और झोपडपट्टीयों में ही नही तो दूर–दराज गाँवों और बस्तियों में भी दूरदर्शन पहुँचा है। पढ़े–लिखे और अनपढ लोगों तक दूरदर्शनने अपनी जादू चलाई है। इस पर चलनेवाले कार्यक्रमों का प्रसारण हिंदी भाषा में होता है। जिसे सामान्य समुदाय भी आसानी से समझ लेता है। क्योंकि हिंदी जन–जन की भाषा है। अनपढ लोग भी इसे आसानी से समझते हैं। दूरदर्शन पर प्रसारित होनेवाले विज्ञापनोंने सबसे ज्यादाह पैमाने में हिंदी को घर–घर तक पहुँचाया है। अब 'मानो सूत्र सा बना है कि हिंदी नही तो विज्ञापन नही। लाखों करोड़ों के ह्रदय मन और मस्तिष्क पर हावी होनेवाले लक्स, लिरिल या संतूर जैसे साबुन हो अथवा कोलगेट, सिबाका या पेप्सोडेंट जैसे टूथपेस्ट सबके सब अपने–अपने कारखानों और दुकानों में हिंदी के बीना बंदी है।"[5] 'ढूंढते रहोगे', 'ठंडा मतलब कोकोकोला', और जाने ऐसे कितने विज्ञापन लोगों के दिलो–दिमाग पर छाए है। आज दूरदर्शन के साथ–साथ कई प्राइवेट हिंदी चैनल आए है, इन चैनलोंने अपने धारावाहिकों को हिंदी में ही जनसामान्य तक पहुँचाया है। खासकर आज सभी महिला वर्ग, बूढ़े से लेकर बच्चे और युवा वर्ग भी इन धारावाहिकों का दिवान बन गया है। आज इन चैनलों की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है हिंदी भाषा।

जनसंचार माध्यम का और एक सशक्त और मोहक माध्यम है फिल्म। ये रंगीन दुनिया अपने जादू से दर्शक को ऐसा मोह लेती है कि आज सब उसके दिवाने हैं। और यह भी किसी से छिपा नहीं है कि फिल्म को समझने के लिए हिंदीतर भाषा के लोग भी हिंदी सीखने के लिए लालायित होते हैं। भाषा के पुरोधा मानते है कि फिल्मोंने हिंदी भाषा को बिगाड़ दिया है परंतु वास्तविकता ये है कि हिंदी को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य जितना इस संचार माध्यम से हुवा है उतना शायद ही किसी दूसरे से हुवा हो। हिंदी के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कोई रचनाकार जितना हिंदी का प्रचार कार्य नहीं कर पाया उतना फिल्म के अभिनेता अभिनेत्रिया, गीतकार, गायकों द्वारा हुवा है।

Scanned by CamScanner